www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भगवान बुद्ध का उत्तरार्द्ध

प्रज्ञावतार

— श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भगवान बुद्ध का उत्तरार्द्ध प्रज्ञावतार

स्त्रष्टा की अवतरण प्रक्रिया

सृष्टिक्रम में सृजन और उत्थान के तत्त्व प्रधान हैं। कृषि कर्म में भूमि शोधन, बीज वपन, हरीतिमा का विस्तार, पुष्प की शोभा और फलों की संपदा का वैभव भी अधिक समय तक दृष्टिगोचर होता है। इतने पर भी वह स्थिति न तो निर्बाध गति से चलती है और न स्थिर रहती है। कृमि-कीटक और पशु-पक्षी उस हरीतिमा को नष्ट करने में कमी नहीं रहने देते। ऋतु प्रभाव भी कई बार इस उत्पादन में अवरोध उत्पन्न करता है। अंततः एक समय ऐसा आता है जब पकी फसल सूखती और अपनी जीवन लीला समाप्त करती है। उत्पादन का क्रम-चक्र चलते रहने के लिए आवश्यक है कि उत्थान के बाद पतन और पतन के बाद उत्थान का क्रम जारी रहे। सूर्य का

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उदय-अस्त, प्राणियों का जन्म-मरण इस सुनिश्चित तथ्य की सुनिश्चित साक्षी देते रहते हैं।

सृष्टि की सुव्यवस्था और सुंदरता देखने ही योग्य है। प्रगतिक्रम का एक इतिहास है जिसमें नए अध्याय जुड़ते ही जाते हैं। इतने पर भी अवगति का अंत नहीं। पतन और पराभव के तत्त्व अपना काम करते हैं और प्राणियों की सुरक्षा के लिए अधिक जागरूक रहने की प्रेरणा देते हैं। जीवन प्रभाव का एक सिरा है जन्म दूसरा मरण। गति चक्र इसी प्रकार बनता है। विस्तार सीधा चलता रहे उतना स्थान इस ब्रह्मांड में नहीं है। इसलिए उसे चक्र गति से परिभ्रमण करने के लिए बाधित किया गया है। पहिये नीचे जाते और ऊपर उठते हैं। सृष्टिक्रम में भी यही होता है। शैशव, किशोरावस्था, यौवन पूर्ण होते-होते जरा-जीर्णता का ढलना आरंभ हो जाता है और अंततः मरण के अतिरिक्त और कोई समाधान रह नहीं जाता है। यह मरण भी अंतिम नहीं है। समापन के दिन से ही नवजीवन की भूमिका आरंभ हो जाती है। मृतक को

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नवीन जन्म मिलता है। असमर्थ वयोवृद्ध के सामने मरण की निराशा रहती तो है, पर उससे अगला कदम अभिनव शैशव के रूप में दूरदर्शी, ज्ञान-चक्षु आसानी से देख सकते हैं। निराशा की सघन तमिस्रा को प्रत्यक्ष देखते हुए भी ऊषा द्वारा नवीन अरुणोदय का आश्वासन हर आस्थावान को उपलब्ध हो सकता है।

मनुष्यों की मनःस्थिति के समष्टि प्रभाव में भी ऐसे ही उत्थान-पतन के पन्ने पलटते रहते हैं। सृजन प्रधान है, उत्कर्ष तथ्य है। शालीनता के साथ व्यवस्था जुड़ी हुई है। यही जीवन है। यही विस्तृत है। यही सुनिश्चित है। इतने पर भी पतन और पराभव से छुटकारा नहीं। घुन छोटा होता है, चिनगारी छोटी होती है और विषाणुओं की सत्ता भी नगण्य है, फिर भी वे चुपके-चुपके इतना कर गुजरते हैं कि मरण अथवा उसके समतुल्य संकट का सामना करना पड़ता है। विश्व के इतिहास में ऐसी संकट की घड़ियाँ अनेक बार आई हैं। जिनमें विनाश के घटाटोप बादल छाये ही नहीं, भयानक रूप से गरजे और सब कुछ

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

डुबा देने की चुनौती लेकर मूसलाधार बरसे भी हैं। इसी आशंका ने जन-जन को भयाक्रांत किया है कि विपत्ति का प्रभाव सर्वनाश करके ही छोड़ेगा।

यह सब होते हुए भी स्त्रष्टा अपनी इस अद्भुत कलाकृति विश्व-वसुधा को, मानवी सत्ता को, सुरम्य वाटिका को विनाश के गर्त में गिरने से पूर्व ही सजाता और अपना सक्रियता का परिचय देता है तथा परिस्थितियों को उलटने का चमत्कार उत्पन्न करता है। यही अवतार है। संकट के सामान्य स्तर से तो मनुष्य ही निपट लेते हैं। पर जब असामान्य स्तर की विपन्नता उत्पन्न हो जाती है तो स्त्रष्टा को स्वयं ही अपने आयुध सँभालने पड़ते हैं। उत्थान के साधन जुटाना भी कठिन है पर पतन के गर्त में द्रुतगति से गिरने वाले लोक मानस को उलट देना अति कठिन है। इस कठिन कार्य को स्त्रष्टा ने समय-समय पर स्वयं ही संपन्न किया है। आज की विषम वेला में भी अवतरण की परंपरा को अपनी लीला संदोह प्रस्तुत करते कोई भी प्रज्ञावान प्रत्यक्ष देख सकता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अगले दिनों मनुष्य की सबसे बड़ी संपदा एवं उपलब्धि ऋतंभरा प्रज्ञा मानी जाएगी। यों कथा प्रसंगों में और धर्म प्रवचनों में प्रज्ञा की महिमा बहुत गायी जाती है और ब्रह्म विद्या के सुविस्तृत कलेवर में उसी का प्रतिपादन किया जाता है किंतु उसे व्यवहार में कार्यान्वित करने का अवसर किन्हीं विरलों को ही मिलता है। सामान्य जीवनक्रम में उसका समावेश नहीं के बराबर होता है। जो बात व्यवहार में नहीं आती, वह कठिन या असंभव मानी जाती है। प्रेरणा प्रदान करने में अनुकरण की परिस्थितियाँ ही प्रभावी होती हैं। दूसरे की देखा-देखी ही कुछ अपनाने और कुछ करने की मानवीय दुर्बलता ही सर्वत्र संव्याप्त है। मौलिक चिंतन की प्रखरता और मौलिक निर्णय की साहसिकता किन्हीं विरलों में ही होती है। बिना दूसरों का प्रभाव ग्रहण किए उच्चस्तरीय नीति अपनाने और उस पर अंत तक दृढ़ बने रहने का आत्मबल तो कदाचित ही किन्हीं मनस्वियों में दृष्टिगोचर होता है। प्रज्ञा के माहात्म्य की चर्चा करते रहना सरल है, पर

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसे अपनाना कठिन है। कठिन इसलिए नहीं कि व्यवहार में जटिल भी असंभव है। कारण मात्र इतना भर है कि अनगढ़ प्रचलनों से आच्छादित वातावरण में अनुकरण के उदाहरण न मिलने से सामान्य व्यक्ति उस दिशा में पग बढ़ाते हुए डरता है। यह डर ही वह बाधा है जो प्रज्ञा को अपनाकर मंगलमय जीवन-यापन करने के आनंद से मनुष्य को वंचित किए रहती है।

प्रज्ञावतार से उत्पन्न युगांतरीय चेतना की विशेषता यह होगी कि अनायास ही जन-जन के मन में ऐसा उल्लास उत्पन्न करेगी, जिसमें अंत:प्रेरणा ही वह कार्य कर सके जो सामान्य व्यक्ति के लिए सामान्य परिस्थितियों में संभव नहीं होता। असंभव को संभव बना देना यही अवतार प्रक्रिया का प्रधान चमत्कार है।

कृष्ण काल में इंद्र के आतंक से ब्रज जलमग्न हुआ जा रहा था। सामान्य बुद्धि भाग खड़े होने के अतिरिक्त और कोई उपाय सोच ही नहीं सकती थी। असंभव को संभव बनाने वाला साहस उभरा। ग्वाल-

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बाल शिलाखंड को दूर-दूर से समेटकर हाथ और लाठियों के सहारे लाने लगे। विशालकाय बाँध बना। बाढ़ और वर्षा से होने वाली हानि टली। इंद्र हारा मनुष्य जीता। असंभव लगने वाला कार्य संभव हुआ। गोवर्धन उठाया गया। सृजन से श्रम शक्ति के नियोजन का सत्परिणाम प्रत्यक्ष हुआ। सामान्यतया ऐसे बड़े कार्य किसी सुसंपन्न शासन तंत्र से ही बन पड़ते हैं। निहत्थे और निर्भय श्रमिक किशोरों में न इतना ज्ञान होता है न अनुभव। सामान्य क्षणिक बुद्धि इस प्रकार के दुस्साहसों में अनर्थ होने का ही निष्कर्ष निकालती है और ऐसे झंझट में उलझने से दूर रहने का ही परामर्श देती है। इसके विपरीत महान उद्देश्य के लिए जोखिम भरे दुस्साहस के लिए कटिबद्ध हो जाना असाधारण आदर्शवादिता का ही काम है। ऐसी प्रेरणा प्रज्ञा के अतिरिक्त और कोई दे ही नहीं सकता।

दुर्योधन के पास जन-शक्ति और साधन-शक्ति असीम थी। पांडव अज्ञातवास में जान बचाते फिर रहे थे। कोई सहायक न था। सहायता करने में

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किसी को अपनी खैर नहीं दीखती थी। पांडव अपने बलबूते पर न सेना खड़ी कर सकते थे न शस्त्र ही जुटा सकते थे। ऐसी दशा में निरीह पांडवों का कौरवों की अनीति से लड़ना संभव न था। फिर भी असंभव संभव हुआ। न्याय पक्ष के समर्थन में महाभारत रचा गया और उसमें पराजय की संभावना को समझते हुए भी असंख्यों आदर्शवादी धर्मयुद्ध लड़ने के लिए पहुँचे। साधनहीनता ने साधनों की विपुलता को पछाड़ा। इससे असमर्थों की साहसिकता देखते ही बनती है। यह चमत्कार मात्र अवतार ही कर सकता है। आदर्शों के लिए घाटा स्वीकार करते हुए लड़-मरने की साहसिकता का अनुदान अवतार के अतिरिक्त और किसी के पास होता ही नहीं।

बुद्धकाल के दुर्दिनों में जन-मानस को कुत्साओं और कुंठाओं ने बेतरह पाप पंक में डुबो रखा था। पुरोहित वर्ग इस अनाचार का मूर्द्धन्य मार्गदर्शन कर रहा था। ऐसी दशा में विचार क्रांति का शंखनाद दोहरे संकट से भरा था। वातावरण की प्रतिकूलता में

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समर्थकों और सहयोगियों की संभावना अत्यंत क्षीण थी। विपक्षियों को निहित स्वार्थों में आँच आने से क्रुद्ध होना और घातक आक्रमण करना स्वाभाविक था। अंगुलिमाल ने प्राण हरण का बीड़ा उठाया और अंबपाली ने चरित्र हनन का। ऐसे घोर निराशा भरे वातावरण में परिस्थितियों को उलट देने वाला उभार उमड़ पड़ना निश्चय ही अप्रत्याशित था। बुद्ध के अभियान को भरपूर सहायता मिली। लाखों व्यक्ति सुख-संपदा को लात मारकर चीवरधारी परिव्राजक बने। संपन्नों से लेकर निर्धनों तक ने उसका सहयोग किया। न जन-शक्ति की कमी रही न धन-शक्ति की। आदर्शवादी पराक्रम आँधी-तूफान की तरह उफनता चला गया और प्रतिकूलताएँ इस प्रकार अनुकूल होती चली गईं मानो मनुष्य को निमित्त बनाकर भगवान ने सारा विधान पहले से रच-पचकर तैयार रखा हो। बुद्ध की क्षमता और परिस्थितियों की विषमताओं का असंतुलन रहते हुए भी जो परिणाम उत्पन्न हुए इन्हें अवतार लीला के अतिरिक्त

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और क्या कहा जाए? आदर्शवादी कथनीय कथन तो बहुत होते रहते हैं, पर ऐसे दुस्साहस कदाचित ही कभी फूटते हैं। जब लोग आदर्शों के परिपालन में अपना सर्वस्व समर्पण करने की बात सोचें ही नहीं वरन हजार प्रतिकूलताओं के रहते हुए भी उसे कर ही गुजरें। आदर्शवादी दुस्साहस ही अवतार है। वह एक भावनात्मक प्रवाह के रूप में उत्पन्न होता है और असंख्यों को अनुप्राणित करता है। श्रेय किस व्यक्ति को मिला, प्रमुख किसे माना जाए, यह बात नितांत गौण है। झंडा लेकर आगे चलने वाले की ही छवि फोटो में आती है। यद्यपि उस सैन्य दल में अनेकों का शौर्य-पुरुषार्थ झंडाधारी की तुलना में कम नहीं अधिक ही होता है।

गांधी युग में भी ऐसा ही चमत्कार उत्पन्न हुआ। अँगरेजों की समर्थता और कुशलता पहाड़ जितनी ऊँची। उनके राज्य में सूर्य अस्त नहीं होता था। युद्ध कौशल में वे अपना शानी नहीं रखते थे। निहत्थे मुट्ठी भर सत्याग्रहियों की टोली उनका

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी, इसकी आशा-अपेक्षा किसी को भी नहीं थी। हजार वर्ष की गुलामी से अस्त-व्यस्त जन समुदाय में ऐसा साहस भी नहीं था कि इतने सशक्त विपक्ष के साथ लड़ मरने के लिए अभीष्ट त्याग-बलिदान का परिचय दे सके। ऐसी निराशाजनक परिस्थितियों में एक अप्रत्याशित उभार उमड़ा। स्वतंत्रता संग्राम ठना और अंततः विजयी होकर रहा। जनसाधारण ने उस संदर्भ में जिस पराक्रम का परिचय दिया, वह देखने ही योग्य है। असमर्थता की समर्थता और साधनहीनों के साधन, असहायों की सहायता करने के लिए वे अनुकूलताएँ न जाने कहाँ से आ उपस्थित हुईं? असंभव लगने वाला लक्ष्य पूरा होकर रहा। यही है सूक्ष्म जगत में बहने वाली प्रचंड शक्तिधाराओं का प्रवाह जो ऊपर से ही शांत और सामान्य दीखते हुए भी भीतर से ज्वालामुखी जैसी विस्फोट क्षमता छिपाए बैठा रहता है। जब फूटता है तो सब कुछ उलट देता है। इसी बुद्धि के लिए अगम्य विलक्षणता को अवतार कहते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अवतार का दार्शनिक विश्लेषण उस ऋतंभरा प्रज्ञा की उमंग भरी हलचल के रूप में किया जाता है। जो मात्र अंत:करणों में अनायास ही उभरती है और अपनी प्रखरता के कारण मनुष्यों को आदर्शवादी दुस्साहस कर गुजरने के लिए विवश करती है। यह अवतरण एक पर नहीं अनेकों पर होता है। जो उस ऊर्जा के वाहन बनते हैं उनके पराक्रम असामान्य होते हैं। उनकी परिस्थिति और मन:स्थिति में कोई तालमेल नहीं रहता। असाधारण सोचना और असाधारण कर गुजरना सामान्य लोगों का काम नहीं है। लोग तो संकीर्ण स्वार्थपरता से आगे की बात सोच ही नहीं पाते। उन्हें निकट का ही दीखता है दूर का नहीं। अस्तु न लोभ छोड़ते बनता है और न शौर्य अपनाते। अवतार इस प्रचलन से विपरीत सोचने और बिना समर्थन पाए एकाकी चल पड़ने की सामर्थ्य प्रदान करता है। इस आवेश में कितने ही व्यक्ति वह कर गुजरते हैं जिसे दैवी पराक्रम के रूप में माना जाता है। इस प्रकार की चेष्टाएँ अपने कर्त्ता को धन्य

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बनाती हैं। वह असंख्यों के लिए उत्कृष्ट पराक्रम कर गुजरने का साहस अपने अनुकरणीय आदर्श द्वारा प्रदान करता रहता है। ऐसे व्यक्ति देवदूत कहलाते हैं। सामान्य भाषा में इन्हें महामानव कहा जाता है। अवतार का प्रधान कार्य अपने लीला काल में देवदूतों में अदृश्य वातावरण की उच्चस्तरीय उमंगें भर देना भर होता है। शेष कार्य तो वे युग सृजेता स्वयं ही करते रहते हैं। सफलता सहज ही उन्हें भी नहीं मिल जाती। प्रतिकूलताओं से लड़ने का पराक्रम और अपने अनुदानों से लोक श्रद्धा उभारने वाला वरदान प्रस्तुत करते रहना ऐसे लोगों के लिए तनिक भी कष्टसाध्य नहीं होता। सामान्य लोग जिसे मुसीबत मोल लेना कहते हैं। मनीषियों के लिए वही कष्टसहना, युग साधना के रूप में सम्मानित होता है। तत्त्वदर्शी इन्हीं अदृश्य हलचलों को जाग्रत आत्माओं के अंत:करणों में उछलती देखते हैं तो कहते हैं, अवतार का आवेश असंतुलन को संतुलन में बदलकर ही रहेगा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रज्ञा अवतरण में उसी परंपरा का निर्वाह होने जा रहा है। श्रद्धा और विवेक का संगम युग-शक्ति के रूप में प्रकट हो रहा है। श्रद्धा अपनाने में पूर्ण तथ्यों को खोजने और यथार्थता अपनाने के लिए विवेक का अवलंबन लेना पड़ता है। अन्यथा अविवेक के रहते अंध-श्रद्धा ही पनपती है और उससे लाभ के स्थान पर हानि ही होती है। बलिष्ठता शरीर की, बुद्धिमत्ता मस्तिष्क की और श्रद्धा अंतरात्मा की शक्ति है। यही चेतना क्षेत्र की सर्वोपरि क्षमता है। श्रद्धा ही मनुष्य को अनंत सामर्थ्य प्रदान करती है। उत्कृष्टता को व्यवहार में उतारने वाला दुस्साहस उसी उद्गम से प्रस्फुटित होता है। जिन्हें श्रद्धा की जितनी मात्रा मिल सकी उन्होंने उतने ही उच्चस्तरीय और उतने ही सुविस्तृत महान कार्य संपन्न किए हैं। गीताकार ने सच ही कहा है—'**श्रद्धामयोऽयं पुरुषः यो यच्छ्रद्धः स एव स।**' यह मनुष्य मात्र श्रद्धा का पुतला है। जिसकी अंतःश्रद्धा जिस स्तर की है, उसका जीवन स्वरूप ठीक उसी के अनुरूप बन

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जाता है। ईश्वरीय प्रयोजन को पूरा करने में अपने प्रचंड पुरुषार्थ की श्रद्धांजलि लेकर युग देवता के चरणों में उपस्थित होने वाले अवतार के सहधर्मी-सहकर्मी माने जाते हैं। अनंत श्रेय के स्वामी ऐसे ही लोग बनते हैं। युग शिल्पियों के स्तर का विस्तार होना इस तथ्य का प्रमाण है कि अवतार की तत्परता कब कितनी प्रखर हो रही है।

श्रद्धा से सामर्थ्य उत्पन्न होना सुनिश्चित तथ्य है। सामर्थ्य का आकर्षण साधनों और सहयोगियों को प्रचुर परिमाण में खींचकर बुला लेता है। उच्चस्तरीय उद्देश्यों की पूर्ति सदा इसी प्रकार संभव होती रही है। साधनों में श्रद्धा उत्पन्न करने की सामर्थ्य नहीं है। साधनसंपन्न दृश्य खड़े करने और हलचलों का चलचित्रों जैसा प्रतिबिंब भर खड़ा कर सकते हैं। मात्र साधनों से संपत्तियाँ और लोक प्रयास लोगों को आकर्षित-चमत्कृत तो करते हैं, पर अनुकरण की प्रेरणा नहीं देते। यही कारण है कि धनिकों, कलाकारों, विद्वानों, प्रचारकों द्वारा खड़े किए गए अभियान-

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आंदोलन अपनी उछल कूद का परिचय तो देते हैं, पर कोई ठोस कार्य कर सकने में सफल नहीं होते। जहाँ तक मनुष्यों को दिशा धारा देने का प्रश्न है, उनकी अंत:स्थिति में उत्कृष्टता अभिवर्द्धन का प्रश्न है, वहाँ तक एक ही उपाय कारगर होता है, श्रद्धासिक्त व्यक्तित्वों का अनुकरणीय आचरण और साधन श्रद्धा के बिना और किसी प्रकार बन नहीं पड़ता। श्रद्धा साधनों के अभाव में भी अपना चमत्कार प्रस्तुत करती है। जब कि साधनों को प्रशंसा तक ही सीमित रहना पड़ता है। वे श्रद्धा का संचार कर सकने में सदा असफल ही बने रहते हैं।

युग परिवर्तन बड़ा काम है। लोक मानस को अवांछनीयता से विरत करके उत्कृष्टता के प्रति भाव-विभोर हो उठने की स्थिति को समष्टि व्यक्तित्व का कायाकल्प ही कहा जा सकता है। यह बड़ा काम है, इसके लिए बड़ी शक्ति चाहिए। चेतना को प्रभावित करने वाली शक्ति एकमात्र श्रद्धा ही है। इसी को गँवा बैठने से अपने समय को दुर्दशाग्रस्त

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होना पड़ा है। इसी अभाव के कारण साधनों की बहुलता भी सुख-शांति को बनाए रखने तक में सफल नहीं हो पा रही है। समस्याओं और विपत्तियों का तथ्य-मूल कारण आस्था संकट के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। श्रद्धा का संवर्द्धन ही प्रकारांतर से नवयुग का, सतयुग का अवतरण है। सूर्य की किरणें पहले पहाड़ की चोटी पर दिखाई देती हैं पीछे नीचे उतरकर समस्त भूतल को आलोक प्रदान करती हैं। प्रज्ञावतार का प्रभाव सबसे पहले जाग्रत आत्माओं पर चमकेगा, तदुपरांत जनसाधारण को उस दिव्य अनुदान से लाभान्वित होने का अवसर मिलेगा।

भगवान के अवतार समय की आवश्यकता के अनुसार अनेक स्वरूप और कार्यक्षेत्र को विनिर्मित करते रहे हैं। जब जिस प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं तब उसी असंतुलन को सही करने के लिए सूक्ष्म जगत में एक दिव्य चेतना प्रादुर्भूत हुई है। अपने कौशल एवं पराक्रम से डगमगाती नाव को सँभालने और भँवरों वाले प्रवाह से उसे बचा ले जाने का

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लीला-उपक्रम ही अवतारों का चरित्र रहा है। सृष्टि के आदि में जब इस भूमि पर जल ही जल था और प्राणि जगत में जलचर ही प्रधान थे, तब उस क्षेत्र की अव्यवस्था को मत्स्यावतार ने सँभाला था। जल और थल पर जब छोटे प्राणियों की हलचलें बढ़ीं, तो तदनुरूप क्षमता वाली कच्छप काया उस समय का संतुलन बना सकी। समुद्र मंथन का पुरुषार्थ, प्रकृति दोहन की प्रक्रिया उन्हीं के नेतृत्व में आरंभ हुई। हिरण्याक्ष द्वारा जल में, समुद्र में छिपी संपदा को ढूँढ़ निकालने तथा तस्कर का दमन करने को वाराह रूप ही समर्थ हो सकता था, वही धारण भी किया गया।

उद्धत उच्छृंखलता का दमन प्रत्याक्रमण से ही हो सकता है। इसके लिए ऐसे अवसरों पर शालीनता से काम नहीं चलता। तब नृसिंहों की आवश्यकता पड़ती है और उन्हीं का पराक्रम अग्रणी रहता है। भगवान ने उन दिनों की आदिम परिस्थितियों में नर और व्याघ्र का समन्वय आवश्यक समझा और दुष्टता के दमन तथा सज्जनता के संरक्षण का अपना आश्वासन पूर्ण किया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संकीर्ण स्वार्थपरता और उससे प्रेरित संचय एवं उपभोग की पशु-प्रवृत्ति को तब उदार बनाने की आवश्यकता पड़ी, जब मनुष्य अपनी आवश्यकता से अधिक कमा सकने में समर्थ हो गया। वामन भगवान के नेतृत्व में छोटे, बौने, पिछड़े लोगों की आवाज बुलंद हुई और बलि जैसे संपन्न लोगों को उदार वितरण के लिए स्वेच्छा से सहमत किया गया। यही वामन अवतार है।

इसके बाद परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध के अवतार आते हैं। इन सबके अवतरण का लक्ष्य एक ही था, बढ़ते हुए अनाचार का प्रतिरोध और सदाचार का समर्थन एवं पोषण। सामंतवादी आधिपत्य को परशुराम ने शस्त्र बल से निरस्त किया। लोहे से लोहा काटा। राम ने मर्यादाओं के परिपालन पर जोर दिया। कृष्ण ने छद्म से घिरी हुई परिस्थितियों का शमन करने में '**विषस्य विषमौषधम्**' का उपाय अपनाया। उनकी लीलाओं में कूटनीतिक दूरदर्शिता की प्रधानता है। तत्कालीन परिस्थितियों में सीधी उँगली घी नहीं

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निकलता होगा तो काँटे से काँटा निकालने के लिए टेढ़ी चाल से लक्ष्य तक पहुँचा गया होगा।

धर्मतत्त्व के श्रेयाधिकारी होते हुए भी उसमें विकृतियाँ भर जाने से साबुन का स्वरूप गंदगी फैलाना जैसा बन गया था। '**मद्यं मांसं च मीनं च मुद्रा मैथुनमेव च**' का अनाचार धर्म की आड़ लेकर लोक व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर रहा था। उन दिनों बुद्ध ने धर्म व्यवस्था का, सज्जनों के संगठन का और विवेक को सर्वोपरि मानने का प्रवाह बहाया था। '**धम्मं शरणं गच्छामि, बुद्धं शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि**' का शंखनाद ही बुद्ध का लीला संदोह है। इस कार्य के लिए उनके आह्वान पर लाखों धर्म प्रचारक प्रव्रज्या पर निकले थे और विचार क्रांति का आलोक संसार के कोने-कोने तक पहुँचाया था।

इस प्रकार 'हम देखते हैं कि' अवतारों का भी क्रमिक विकास हुआ है। उनकी कलाएँ क्रमशः आई हैं। कच्छ-मच्छ एक-एक कला के अवतार थे। वाराह और वामन दो-दो के। नृसिंह और परशुराम

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तीन-तीन कला के माने जाते हैं। राम बारह के, कृष्ण सोलह के और बुद्ध बीस कला के अवतार माने गए हैं। निष्कलक के बारे में कहा गया है कि वे चौबीस कला के होंगे। यह क्रमिक विकास है। संपूर्ण कलाएँ चौंसठ मानी जाती हैं। सृष्टिक्रम में अवतारों की शृंखला अनवरत चलती रहती है और विश्व विकास के साथ-साथ उनकी कला सामर्थ्य भी बढ़ती रहेगी।

भूतकाल के अवतारों में प्रारंभिक का कार्य क्षेत्र भौतिक परिस्थितियों से जूझना भर था। उसके बाद वालों को अनाचारियों से लड़ना पड़ा। इसके बाद स्थापनाओं का क्रम चलता है। राम को मर्यादा पुरुषोत्तम, कृष्ण को पूर्ण पुरुष और बुद्ध को विवेक का देवता कहा जाता है। इनके चरित्र और कर्तृत्व में उच्चस्तरीय स्थापनाओं का दौर है। अधर्म का नाश करने के लिए उनके जितने प्रयत्न हुए हैं,उनकी अपेक्षा स्थापनाओं पर गतिविधियाँ अधिकाधिक केंद्रित रही हैं। कृष्ण का गीता प्रतिपादन और बुद्ध का बुद्धि की शरण में जाने का प्रचंड अभियान, जन-जीवन को दिशा और

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लोक मानस को प्रेरणा देने में अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में अधिक प्रयत्नशील रहे। प्रज्ञावतार का कार्य अपेक्षाकृत अधिक कठिन और अधिक व्यापक है। उसे सामयिक समस्याओं एवं व्यक्तिगत उद्दंडताओं से ही नहीं जूझना है, वरन लोक मानस में ऐसे आदर्शों का बीजारोपण, अभिवर्द्धन, परिपोषण एवं क्रियान्वयन करना है, जो सतयुग जैसी भावना और रामराज्य जैसी व्यवस्था के लिए आवश्यक अंतःप्रेरणा व्यापक क्षेत्र में उत्पन्न कर सके। लक्ष्य और कार्य की गरिमा एवं व्यापकता को देखते हुए प्रज्ञावतार की कलाएँ चौबीस होना स्वाभाविक है।

बदलती परिस्थितियों में बदलते आधार भगवान को भी अपनाने पड़े हैं। विश्व विकास की क्रम व्यवस्था के अनुरूप अवतार का स्तर एवं कर्म क्षेत्र भी विस्तृत होता चला गया है। मनुष्य जब तक साधन प्रधान और कार्य प्रधान था तब तक शास्त्र और साधनों के सहारे काम चल गया। आज की परिस्थितियों में बुद्धि तत्त्व की प्रधानता है। मन ही सर्वत्र छाया हुआ

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है। महत्त्वाकांक्षाओं के क्षेत्र में अनात्म तत्त्व की भरमार होने से संपन्नता और समर्थता का दुरुपयोग ही बन पड़ रहा है। महामारी सीमित क्षेत्र तक नहीं रही, उसने अपने प्रभाव क्षेत्र में समूची मानव जाति को जकड़ लिया है। विज्ञान ने दुनिया को बहुत छोटी कर दिया है और गतिशीलता को अत्यधिक द्रुतगामी। ऐसी दशा में भगवान का अवतार युगांतरीय चेतना के रूप में ही हो सकता है। जन-मानस के सुविस्तृत क्षेत्र में अपने पुण्य प्रवाह का परिचय देना इसी रूप में संभव हो सकता है, जिसमें कि 'प्रज्ञावतार' के प्रादुर्भाव की सूचना-संभावना सामने है।

बुद्ध के बुद्धवाद का स्वरूप 'विचार क्रांति' था। पूर्वार्द्ध में धर्मचक्र का प्रवर्तन हुआ था। धर्म धारणा में सामान्यतः लाखों व्यक्तियों ने भाव भरा योगदान दिया था। आनंद जैसे मनीषी, हर्षवर्धन जैसे श्रीमंत, अंबपाली जैसे कलाकार, अंगुलिमाल जैसे प्रतिभाशाली बड़ी संख्या में उस अभियान के अंग बने थे। इससे पिछले अवतारों का कार्य क्षेत्र सीमित रहा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

था, क्योंकि समस्याएँ छोटी और स्थानीय थीं। बुद्ध-काल तक समाज का विस्तार बड़े क्षेत्र में हो गया था। इसलिए बुद्ध का अभियान भी भारत की सीमाओं तक सीमित नहीं रहा और उन दिनों जितना व्यापक प्रयास संभव था उतना अपनाया गया। धर्मचक्र प्रवर्तन भारत से एशिया भर में फैला और उससे भी आगे बढ़कर उसने अन्य महाद्वीपों तक अपना आलोक बाँटा।

प्रज्ञावतार, बुद्धावतार का उत्तरार्द्ध है। बुद्धि प्रधान युग की समस्याएँ भी चिंतन प्रधान होती हैं। मान्यताएँ, विचारणाएँ, इच्छाएँ ही प्रेरणा केंद्र होती हैं और उन्हीं के प्रवाह में सारा समाज बहता है। ऐसे समय में अवतार का स्वरूप भी तदनुरूप ही हो सकता है। लोकमानस को अवांछनीयता, अनैतिकता एवं मूढ़ मान्यता से विरत करने वाली विचार क्रांति ही अपने समय की समस्याओं का समाधान कर सकती है।

समुद्र मंथन से चौदह रत्न निकले थे। हृदय मंथन की वर्तमान भाव चेतना से अनेकानेक नर रत्नों

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का निकलना निश्चित है। समुद्र मंथन से निकले रत्नों ने सृष्टि को आदिम स्थिति में उत्कृष्टता के साधनों का बाहुल्य उपस्थित किया था। लक्ष्मी (संपदा), सूर्य (ज्ञान), चंद्रमा (संतुलन), अमृत (आत्मज्ञान), धन्वंतरि (शमन), वज्र (अनुशासन), अश्व (उत्साह), ऐरावत (पराक्रम), रंभा (कला); जैसी अनेकों दिव्य संपदाएँ आविर्भूत हुईं तो समुद्र मंथन ने तत्कालीन परिस्थितियों को कुछ से कुछ बना दिया था। इन दिनों भी ऐसा ही कुछ होने जा रहा है। अंत:प्रेरणा से उत्पन्न हुआ आत्मज्ञान और भावावेश मनुष्यों को कुछ उच्चस्तरीय सोचने और करने के लिए विवश करेगा। अग्रगामी सदा अपने अनुयायी उत्पन्न करते और परंपराओं को जन्म देते हैं। जाग्रत आत्माओं द्वारा अपनाई गई युग साधना का प्रवाह जन-मानस को अनुकरण के लिए अनायास ही आकर्षित और प्रेरित करेगा। पिछले दिनों जहाँ आदर्शवादिता के दोनों आधार धर्म और अध्यात्म चर्चा एवं उपचार की विडंबनाओं में उलझकर रहते रहे हैं। इन दिनों उन्हें

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपनी प्रखरता प्रकट करने का, प्रत्यक्ष कार्यरत होने का अवसर मिलेगा। इंजन चलता है तो डिब्बे अनायास ही लुढ़कने लगते हैं। तूफान उठता है तो पत्ते और तिनके साथ ही उड़ने लगते हैं। जल प्रवाह में जाने क्या-क्या साथ ही तैरता, डूबता, बहता चला जाता है। जाग्रत आत्माओं के अपने उदात्त दृष्टिकोण और उदार आचरण से जब लोक श्रद्धा उभरेगी तो अनेकों व्यक्तियों एवं सत्प्रवृत्तियों को प्रगति के पथ पर द्रुतगति से अग्रसर होते देखा जा सकेगा।

इस तथ्य को हजार बार समझा और लाख बार समझाया जाना चाहिए कि अपने युग की समस्याएँ परस्थितिजन्य दीखती भर हैं। वस्तुतः उनका उद्भव विकृत मनःस्थिति से हुआ है। जड़ तक पहुँचने पर ही समाधान खोजा जा सकेगा। मनःस्थिति बदलने से ही परिस्थितियाँ बदलेंगी। नाली साफ करने पर ही मक्खी, मच्छरों और दुर्गंध फैलाने वाले विषाणुओं से छुटकारा मिलता है। रक्त शुद्धि का चिरस्थायी उपचार किए बिना निरंतर उठते रहने

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वाले फोड़े-फुन्सियों से पिंड नहीं छूटता। समस्याएँ असंख्य हैं, उनके बाह्योपचार भी असंख्य हो सकते हैं। यह प्रत्यत्न हो रहे हैं और होते भी रहेंगे। प्रतिफल और अनुभव भी सामने हैं। समाधान चाहे शासनतंत्र ने ढूँढ़े हों, चाहे अर्थतंत्र ने, बात कुछ बनी नहीं है। एक हाथ जोड़ने के साथ ही दो हाथ टूटने का सिलसिला चलता रहे तो गुत्थियों का सुलझना किस प्रकार संभव हो सकता है। बुद्धि और संपदा की, साधन और सामर्थ्य की इन दिनों कोई कमी नहीं। सृष्टि के आदि से लेकर अब तक के इतिहास में मनुष्य कभी इतना समृद्ध और सशक्त नहीं हुआ, जितना इन दिनों है। साथ ही यह भी सच है कि वर्तमान में उस पर जितनी विपन्नता छाई है उतनी भूतकाल में कभी भी सहन नहीं करनी पड़ी।

मनुष्य की वितृष्णा आंतरिक समाधान, संतुलन, संतोष जैसे चिंतन से ही शांत होगी। अन्यथा तनिक-तनिक सी बातों पर उत्तेजना, उद्विग्नता के ज्वालामुखी फूटते रहेंगे। वस्तुओं का बाहुल्य और

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्यक्तियों का अनुकूलन एक स्वप्न है जिसकी पूर्ति व्यावहारिक जीवन में संभव नहीं। हर किसी को तालमेल बिठाकर चलना पड़ता है। अधिकार के साथ कर्त्तव्य को, उपार्जन के साथ संतोष को, संघर्ष के साथ सहयोग को, उपभोग से साथ संयम को मिलाकर चलने से ही मानसिक संतुलन बनता है। किसी को मानसिक तनावों से छुटकारा पाना है तो अनुकूल परिस्थितियाँ प्राप्त होने तक की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। चिंतन में विधायक तत्त्वों को भर लेने, दृष्टिकोण को ऊँचा उठा लेने से ही काम चल जाता है।

यदि अनैतिकता के वैयक्तिक एवं सामाजिक स्वरूप पर अंकुश लगाना है तो इसका एक ही उपाय है, व्यक्ति के अंतःकरण में धर्म धारणाओं का घनीभूत होना। यह तभी संभव है जब ऐसा वातावरण बना सकने योग्य, प्रबल मनोबल का धनी लोकनायकों का नेतृत्व उभरकर आए। नेतृत्व की हर क्षेत्र में माँग है, पर उसे प्रतिभा और चतुरता के सहारे उपलब्ध

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करने का प्रयत्न किया जाता है। फलतः वह अभिनेताओं जैसे कौतुक-कुतूहल दिखाकर समाप्त हो जाता है। स्थायित्व उस गरिमा में है जो चिंतन और चरित्र के हर घटक में छाई रहती है। जिसमें श्रेष्ठ चिंतन के अतिरिक्त दुष्ट आचरण की छद्म एवं स्वार्थ साधन के लिए कहीं गुंजाइश ही नहीं रह जाती। ऐसे उच्चस्तरीय नेतृत्वों का उदय ही जब बंद हो गया तो लोकचेतना को कौन जगाए? पीढ़ी का मार्गदर्शन कौन करे? भटकने और भटकाने वाले लोग ही नेता और अनुयायियों की मंडलियाँ बनाकर जन कल्याण के नाम पर शालीनता का ढकोसला खड़ा किए हुए हैं। यह परिस्थिति और किसी तरह दूर नहीं हो सकती। प्रज्ञावतार की प्रेरणा से उत्पन्न उत्कृष्टता संपन्न मनःस्थिति ही नेतृत्व के अभाव को पूरा कर सकने में समर्थ हो सकती है।

दृष्टि पसार के वास्तविकता को ढूँढ़ने पर समस्त समस्याओं का एक ही कारण दिखाई देता है आस्था संकट-निकृष्ट चिंतन। उसका निराकरण आज एक ही उपाय से हो सकता है। अंतःचेतना का

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उर्ध्वगमन, उन्नयन एवं अभ्युदय। प्रज्ञावतार की तूफानी गतिविधियाँ ही अब जन-जन के अंत:करण को झकझोरेंगी और उसे क्रमश: उस दिशा में धकेलती, घसीटती ले चलेंगी, जहाँ उसे शालीनता और सदाशयता से बढ़कर और कुछ मूल्यवान प्रतीत ही न होता हो। उत्कृष्टता का संवर्द्धन ही जिन प्रयासों का एकमेव उद्देश्य हो। जब हर व्यक्ति यह अनुभव करने लगे कि प्रत्यक्षत: तात्कालिक लाभ मिलते हुए भी अनैतिकता एक घाटे का सौदा है, यह जान लेना चाहिए कि उसके अंत: में परिष्कृत चेतना का अभ्युदय आरंभ हो गया। यही प्रज्ञावतार के लक्षण हैं, जो देव मानवों के माध्यम से प्रकटीकृत हो रहे हैं। मूर्द्धन्य देव मानवों को प्रतीक बनाकर प्रज्ञावतार आस्था संकट के निवारण का प्रयास कर रहा है। धर्म क्षेत्र की नर्सरी में ही ऐसे देव मानवों-महामानवों के कल्पवृक्ष उत्पन्न हो सकते हैं।

जब भी कभी क्रांति हुई है, उसका कोई न कोई प्रतीक रहा है। ध्वज को प्रतीक बनाकर विगत काल में सामाजिक एवं राजनैतिक क्रांतियाँ हुईं। धार्मिक

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्षेत्र में मंत्र, देवता, तिलक, ग्रंथ आदि को आगे रखा गया है। अपने युग में जो महाभारत लड़ा जाएगा, वह विशुद्धतः चेतना क्षेत्र का होगा। उसमें विचारणाएँ, मान्यताएँ, आस्थाएँ, आकांक्षाएँ ही उखाड़ी और जमायी जाएँगी। उसका प्रारूप क्या हो ? उसका निर्धारण क्या हो ? गायत्री महामंत्र के अक्षरों में उन सभी तथ्यों का समावेश है, जो सद्भावसंपन्न आस्थाओं के निर्माण एवं अभिवर्द्धन का प्रयोजन पूरा कर सकें। व्यक्ति का चरित्र-चिंतन और समाज का विधान-प्रचलन क्या होना चाहिए, इसका ऐसा सुनिश्चित निर्धारण इस महामंत्र के अंतराल में विद्यमान है, जिसे सार्वभौम, सार्वजनीन, सर्वोपयोगी माना जा सके।

करने से पहले सोचना आवश्यक होता है। प्रयाण से पहले लक्ष्य निर्धारण होता है। नवयुग का प्रारूप सामने होने पर ही उस घोषणा पत्र एवं संविधान को समझकर लोकमानस को उसे समझाने-अपनाने का प्रयास आरंभ हो सकेगा। इसके लिए नए सिरे से कुछ नया उहापोह करना नहीं है। चिर पुरातन को

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चिर नवीन के साथ जोड़ देने से काम चल जाएगा। सतयुग में मानवी चिंतन और कर्तृत्व का आधार गायत्री ही रहा है। उसी को मानव धर्म-संस्कृति का उद्गम तथा प्रथा-प्रचलन का सुनिश्चित आधार गुरुमंत्र माना जाता रहा है। उस महान तत्त्वज्ञान को अपनाकर हमारे पूर्वज महामानव और नर-नारायण का जीवन जीते रहे हैं। देवता स्वर्ग में रहते हैं। उन देव मानवों की मनःस्थिति अपने इर्द-गिर्द स्वर्गीय परिस्थितियों का सहज सृजन करती है। यह नया प्रयोग नहीं है। चिरकाल तक परखा गया परीक्षण है। उसी पुरातन का नवीन संस्करण प्रस्तुत होने जा रहा है। अस्तु, देव-संस्कृति की जन्मदात्री देवमाता अगले दिनों अपना विशाल विस्तार वेदमाता के रूप में करेगी। वेदमाता अर्थात सद्ज्ञान की अधिष्ठात्री। सुसंस्कृत और समुन्नत विश्व का निर्माण उन्हीं के द्वारा होने जा रहा है। अतएव गायत्री की विश्वमाता भूमिका भी उज्ज्वल भविष्य के अनुरूप ही होगी।

❐

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता :** जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक :** जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी :** जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक :** जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी :** जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक :** जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक :** जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक :** जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना :** जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org